Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2020 SHISRRJ | Volume 3 | Issue 1 | ISSN : 2581- 6306

धार्मिक एवं दार्शनिक दृष्टियों के सन्दर्भ में कालिदास का प्रेम-विश्लेषण

अनुज कुमार

शोधछात्र, संस्कृत विभाग

वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा

शोध आलेख सार – महाकवि कालिदास ने अपने काव्यों में धार्मिक एवं दार्शनिक दृष्टियों के सन्दर्भ में प्रेम का विश्लेषण किया है । उन्होंने पुरुषार्थ चतुष्टयं – धर्म, अर्थ , काम और मोक्ष का क्रमशः उपयोग एवं उपभोग करने से मानवीय जीवन में त्रुटि नही रह पाता और जीवन चिरन्तन सुख को प्राप्त करता है । उनके ग्रंथों में सांख्य दर्शन के प्रकृति पुरुष एवं त्रयगुणादि से युक्त होकर जीवन की पराकाष्ठा का वर्णन उपलब्ध होता है ।

मुख्य शब्द – धर्म , अर्थ , काम , मोक्ष , प्रकृति , पुरुष , सत्त्व ,रज , तम ।

आनन्द रस की अमृत स्रोतस्विनी प्रवाहित करने वाले एवं भारतीय संस्कृति के चिरन्तन आदर्शों को कान्तासम्मित अभिव्यक्ति प्रदान करने वाले कालिदास ने अपने काव्यों में धार्मिक एवं दार्शनिक दृष्टियों के सन्दर्भ में प्रेम का विश्लेषण किया है।

धर्म शाश्वत नियमों को धारण करने के कारण चारों पदार्थों में प्रमुख स्थान रखता है। मानवीय दोषों को दूर करने के लिए धर्म ही सही मार्गद्रष्टा है। धर्म को धारण करने से ही मानव में अच्छे कार्यों को करने और अच्छे माध्यमों से अर्थ को पाने की प्रवृत्ति होगी। अर्थ ही मानव–जीवन के सांसारिक व्यवहार को चलाने में मुख्य माध्यम है और अर्थ ही अनर्थ का कारण भी है। धर्म के आधार के बिना अर्थ विनाशकारी भी हो सकता है, क्योंकि अच्छे माध्यमों से उपार्जित अर्थ को सुखपूर्वक एवं विधिवत् उपभोग किया जाता है। संसार में सदा से अर्थ का महत्त्व रहा ही है, क्योंकि महाभारत के शान्तिपर्व में अर्थ और अर्थवान् की इस प्रकार प्रशंसा की गई है कि संसार में जिसके पास धन–अर्थ है उसके ही सब बन्धु–बान्धव हो जाते है, वही संसार में श्रेष्ठ पुरुष माना जाता है और वही पण्डित–बुद्धिमान माना जाता है –

यस्यार्थास्तस्य मित्राणि यस्यार्थतस्य बान्धवाः।

यस्यार्थाः स पुंमाल्लोके यस्यार्थाः स च पण्डितः।।[1]

संसार में सांसारिक सुखों को भोगने और उनसे पूर्णरूप से परितृप्त होने के पश्चात् ही मोक्ष की कामना होती है। यही कारण है कि भारतीय मनीषियों ने सही तत्त्व ग्रहण करके जगत् के निवासियों के लिए पुरुषार्थ चतुष्टय 1. धर्म 2. अर्थ 3. काम और 4. मोक्ष का एक क्रमिक रूप में सही इतिहास बताया है। सचमुच यह मानवीय जीवन का सही रहस्य है। क्रमशः उपभोग एवं उपयोग करने से त्रुटि नहीं हो पाता है और सही अनुभूति प्राप्त हो जाती है। हमारे महाकाव्यों और धार्मिक साहित्य ने भी मानव-जाति को नैतिक दृष्टि से जीवन की सही पद्धति दिखाई है। पुरुषार्थ के चार स्वरूपों को सुखी जीवन व्यतीत करने और जगत् के सही स्वरूप को जानने का मूल आधार माना है। महाकवि कालिदास ने हिमालय के परम पावन भूभाग उत्तराखण्ड में जन्म से लेकर सम्पूर्ण तपोभूमि का भ्रमण कर, सिद्ध पुरुषों के दर्शन पाकर और धार्मिक भावों को ग्रहण कर जगत् के कल्याण के लिए अपने काव्यों में सर्वप्रथम उस सर्वशक्तिमान ईश्वर शिव और शक्ति का विश्वकल्याणकारी समन्वय रूप को स्मरण कर अपने काव्य और नाटकों में परम सौन्दर्यमय आकर्षण के साथ अपने युग की विचारधारा को अभिव्यक्त किया है। जगत् और जगत्-नियन्ता के स्वरूप को बता कर उसके प्रति अपनी सच्ची श्रद्धा भक्ति दिखाई है।

महाकवि कालिदास ने धार्मिक भावों से अभिप्रेत होकर ही हिमालय को कुमारसम्भव महाकाव्य में देवतात्मा के रूप में स्मरण कर अपने पाठकों को हिमालय में अनन्त रत्नों का उल्लेख कर उसे पशु-पक्षी आदि का भी आश्रयदाता माना है। हिमालय तपस्वियों की भी साधना स्थली है और कालिदास ने शिव-शक्ति की धार्मिक भावों से प्रभावित होकर ही कुमारसम्भव में शिव की भक्ति से पार्वती ने साधना द्वारा परमतत्त्व शिव को प्राप्त किया। शिव-शक्ति से कुमारकार्तिकेय जैसा तारकासुर विनाशक पुत्र प्राप्त किया। काव्य के चमत्कार के साथ धार्मिक आस्था के द्वारा कालिदास ने हिमालय के धार्मिक महत्त्व का गुणगान किया है -

---

अस्त्युत्तरस्यां दिशि देवतात्मा हिमालयो नाम नगाधिराजः।

पूर्वापरौ तोयनिधीवगाह्य स्थितः पृथिव्या इव मानदण्डः।।[2]

स्वर्ग की गङ्गा को हिमालय से जगत् कल्याण के लिए पृथ्वी पर लाया गया। अतएव पृथ्वी पर गङ्गा का सबसे अधिक महत्त्व दिखाया गया है। गङ्गाजल स्नान से शरीर का मल और पीने से मन का मल दूर होता है। गङ्गा का पवित्र जल कल्याण करने वाला, श्रम हरने वाला है। इसमें डुबकी मारकर मनुष्य पापों से निवृत्त और पुण्य प्राप्त करने वाला हो जाता है। कालिदास ने कुमारसम्भव में इसे स्पष्ट किया है -

गङ्गा वारिणी कल्याणकारिणी भ्रमहरिणी।

स मग्नो निवृतिं प्राप्तः पुण्यभारिणी तारिणी।।[3]

महाकवि कालिदास ने धार्मिक भावों से प्रभावित होकर ही धार्मिक आस्था रखने वाले लोगों को धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष का सही रूप दिखाकर अपने जीवन में शुभ रूप दिखाकर अपने जीवन में शुभ कार्य करने पर विशेष रूप से बल दिया है। धर्म से अर्थ की प्राप्ति, अर्थ से कामनाओं की सिद्धि और सांसारिक सौन्दर्य का उपभोग एवं उपयोग करने से काम की निवृत्ति तथा मोक्ष प्राप्ति की ओर प्रवृत्ति का जगना ही भारतीय संस्कृति का अन्तिम उद्देश्य है। महाकवि कालिदास ने अपने काव्यों से प्रवासी जीवन में सभी कुछ प्राप्त किया है और परम धार्मिक बनकर मुक्तिदाता भगवान शंकर से अपने अन्तिम नाटक अभिज्ञान शाकुन्तलम् में इस प्रकार संसार का समस्त सुख भोगकर मोक्ष प्राप्ति के लिए प्रार्थना की है –

'सर्वशक्तिमान् स्वयम्भू शंकर मुझे पुनर्जन्म से मुक्त कर दो।'

ममापि च क्षपयतु नीललोहितः।

पुनर्भवं परिगतशक्तिरात्मभूः।।[4]

महाकवि कालिदास के ग्रन्थ जहाँ काव्य–सौन्दर्य के परमानन्द की प्राप्ति कराते है, वहीं उसे आस्तिकवादी बनाकर पाठक को परम धार्मिक भी बना देते हैं। जिससे व्यक्ति अपने कर्तव्य का परिपालन करता हुआ शाश्वत नियमों के विरुद्ध कार्य नहीं करता और मुक्ति पथ का राही बन जाता है। वास्तव में नैतिक ह्रास होने के कारण आज व्यक्ति आस्थाओं और सही आचरण न करने के कारण धर्म को सम्प्रदाय की संकुचित परिधि में परिबद्ध कर उसका सही स्वरूप नहीं पहचान पा रहा है और दुःख में पड़ा है। आज हमारे लिए भ्रष्टाचार, अनाचार और नैतिक पतन उसी का कारण है।

कालिदास के काव्य से स्पष्ट होता है कि देवताओं ने ब्रह्मा की स्तुति करते हुए कहा है कि वे सृष्टि–संरचना के समय सत्त्व, रज एवं तम–तीनो गुण उत्पन्न करके ब्रह्मा, विष्णु, महेश नाम से सुख्यात हो गये। संसार की संरचना करते समय वे ही स्त्री एवं पुरुष के रूप धारण कर लेते है और वे ही दोनों रूप संसार के माता–पिता कहे जाते है। वे जब सोते हैं तो संसार का महाप्रलय हो जाता है। और जब जागते हैं तो सृष्टि का संचार होता है। वे ही हव्य एवं होता भी हैं और भोग्य और भोक्ता भी। उन्हें वेद्य और वेदिता भी कहा जाता है।[5]

यहाँ सांख्य दर्शन की प्रकृति पुरुष एवं त्रिगुणादि से सम्बन्धित मान्यताएँ स्पष्ट हुई हैं। परमात्मा के परस्पर विपरीत धर्माश्रयत्व का वर्णन भी 'कुमारसम्भवम' में प्राप्त होता है –

द्रवः संघातकठिनः स्थूलः सूक्ष्मोः लघुर्गुरुः।

व्यक्तो व्यक्तैतरश्चापि प्राकाम्यं ते विभूतिषु।।[6]

रसात्मक प्रेम का गीत गायक कवि कालिदास धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष में भी विश्वास करते है- " धर्मार्थकाममोक्षाणामवतारे" प्रेम का सरस एवं सलिल गीत-गायक कवि कालिदास दर्शन की पगडण्डियों पर परिभ्रमण करता हुआ दृष्टिगोचर होता है। जीवन की क्षणभङ्गुरता, मृत्यु की अनिवार्यता एवं उनके प्रति विद्वज्जनों की वाञ्छित दृष्टि का विश्लेषण महाकवि ने इन्दुमती के निधन के सन्दर्भ में राजा अज की व्याकुलता विरह-वेदना की व्यथा को दूर करने हेतु महर्षि वशिष्ठ द्वारा दिए गये उपदेशों में उपलब्ध होता है। महर्षि वशिष्ठ का कहना है कि जिसने भी शरीर धारण किया है, उसका मरना अनिवार्य है। प्रियजन की मृत्यु को मूर्ख लोग वैसा ही कष्टकारक मानते हैं जैसा कि छाती में कील गड़ गई हो, लेकिन विद्वान् लोग ऐसा समझते हैं कि जो मर गया वह सभी प्रपञ्चों से मुक्त हो गया -

मरणं प्रकृतिः शरीरिणां विकृतिर्जीवितमुच्यते बुधैः।

क्षणमप्यवलिष्ठते श्वसन् यदि जन्तुनैनु लाभवानसौ।।

अवगच्छति मूढचेतनः प्रियनाशं हृदि शल्यमर्पितम्।

स्थिरधीस्तु तदेव मन्यते कुशलद्वारतया समुद्धृतम्।।[7]

आचार्य शिवबालक राय कहते है कि "रसिक को रस से लेकिन वणिक को मूल्य से काम रहता है। भौंरा शकुन्तला का अधरामृत पीता है और दुष्यन्त उसकी जाति का अन्वेषण करने लगता है। जिस ह्रदय ने काव्य का आस्वादन जिस रूप में किया, उसने उसी रूप में मूल्यों का भी पान कर लिया।"[8]

वस्तुतः काव्य कला में जीवन और जगत् के प्रति कवि का दृष्टिकोण भी प्रतिबिम्बित हो जाता है। कवि ने मेघदूतम् में मेघ के माध्यम से चेतन-अचेतन नायिकाओं के भोग विलास को उत्तेजित किया है। इसके साथ ही उन्होंने यह भी दर्शाया है कि काम को सदा शिव के सान्निध्य में ही रहना चाहिए। श्री वासुदेव शरण अग्रवाल ने महाकवि कालिदास के दार्शनिक दृष्टि से विज्ञान के सन्दर्भ में अपना निष्कर्ष देते हुए लिखा है-" वस्तुतः कालिदास का सम्पूर्ण दार्शनिक विज्ञान शिव के स्वरूप के पीछे छिपा हुआ है।..... कालिदास उत्तम कोटि के अद्वैतवाद को मानने वाले थे। वेदान्त प्रतिपादित ब्रह्म को शिव कहते है।[9]

जीवन की अनिश्चितता यक्ष के द्वारा अपनी बल्लभा के लिए दिए गये सन्देश में ध्वनित हुई है। यक्ष मेघ से कहता है कि तू विरहिणी से यही कहना कि हे अबले! तुम्हारा सहचर जीवित है। उसने तुम्हारा कुशल पूछा है। जिन लोगों पर विपत्ति पड़ी हो उनसे पहले-पहले पूछना यही उचित है -

अव्यापन्नः कुशलमबले पृच्छतित्वा वियुक्तः।

पूर्वाभाष्यं सुलभविपदां प्राणिनामेतदेव।।[10]

जीवन सुख-दु:ख की क्रमबद्ध श्रृंखला है। दोनों सामान्य रूप से सत्य है और दोनों एक दूसरे के बाद पहिए के चक्कर के समान ऊपर-नीचे आया जाया करते है और इस विषय का सन्देश देने के लिए यक्ष मेघ से आग्रह करता है -

कस्यात्यन्तं सुखमुपनतं दु:खमेकान्ततो वा।

नीचैर्गच्छत्युपरि च दशा चक्रनेमिक्रमेण।।[11]

अर्थ और मोक्ष की तुलना में महाकवि ने धर्म को अधिक महत्त्व प्रदान किया है। 'कुमारसंभवम्' में भगवान् शिव पार्वती से कहते है कि हे देवी आपके आचरण से मुझे यह ज्ञात होता है कि त्रिवर्ग के सार धर्म ही है, क्योंकि आप अर्थ और काम से विरक्त होकर केवल धर्म की ही सेवा कर रही है -

अनेन धर्म: सविषेशमद्य मे त्रिवर्गसार: प्रतिभाति भाविनि।

त्वया मनोनिर्विषयार्थकामया यदेकं एवं प्रतिगृह्य सेव्यते।।[12]

कविवर रविन्द्र की दृष्टि में मेघदूत चिरन्तन प्रेम और सौन्दर्य का अमर सन्देश प्रदान करता है। अपने चिर सुन्दर प्रियतमा से वियुक्त होकर यह जीव यक्ष की तरह अभिशप्त रहा है। शरद की निर्मल एकान्त में पुन: जीवात्मा और परमात्मा का मिलन होता है। अलका अनन्त सौन्दर्य और अक्षय आनन्द का लोक है। अभिशप्त जीवन विरह-साधना के द्वारा शुद्ध होकर ज्ञान की सरस्वती का जल पीकर शिव की सेवा में लीन हो जाता है। आचार्य शिवबालक राय का कहना है कि-" मेरा विनम्र निवेदन है कि कालिदास के अनुसार भक्ति के द्वारा शिव के पदों की प्रदक्षिणा करना एवं मृत्यु के उपरान्त उनके गण का पद प्राप्त करना ही जीवन की परम सिद्धि है।"

तत्र व्यक्तं हृषदि चरणन्यासमर्धेन्दुमौले:

शाश्वत्सिद्धैरूपचितबलिं भक्तिनम्र: परीया:।

यस्मिन् दृष्टे करणविगमादूर्ध्वमुद्भूतपापा:

संकल्पन्ते स्थिरगणपदप्राप्तये श्रद्धधाना:।।[13]

श्रृंगारिक सुख निन्द्य नहीं है, क्योंकि वह सृष्टि के विकास का स्रोत है। संसार के विहित भोगों का उपयोग निन्द्य नहीं है। वस्तुत: भोग प्रेय है, पर श्रेय का रास्ता प्रेय के दरवाजे से ही होकर निकलता है। धर्म-सहित प्रेय ग्राह्य है। शिव के मस्तिष्क में बिना समय काल द्वारा क्षोभ उत्पन्न करना, समाधि के आनन्द को नष्ट करना पाप स्वरूप है। अस्तु होना ही है। लेकिन धर्म के आदर्श बन्धन में आबद्ध काम से कुमार का जन्म होता है, जिससे लोक-कल्याण सम्भव हो पाता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ :-

1. महाभारत, शान्तिपर्व 8 अध्याय 19 श्लोक

2. कुमारसंभवम् 1/1

3. कुमारसंभम्

4. शकुन्तला नाटक 7 अङ्क 34 श्लोक

5. कुमारसंभवम्- 2/99

6. कुमारसंभवम्

7. रघुवंशम्-8/87-88

8. कालिदास के सौन्दर्य सिद्धान्त और मेघदूत, पृष्ठ - 176

9. मेघदूत एक अध्याय, पृष्ठ - 141

10. उत्तरमेघ-43

11. उत्तरमेघ-52

12. कुमारसंभवम्-5/38

13. मेघदूतम्-1/55